दिल थाम कर सुनो, कि निजी स्‍कूलों के लालची गधों के हवाले हैं तुम्‍हारे बच्‍चे

Written by कुमार सौवीर
Monday, 19 June 2017 22:57

: सेंट्रल स्‍कूल, सरकारी स्‍कूल और नवोदय स्‍कूलों में ही बसती है मेधा, निजी स्‍कूलों में उनकी प्रतिभा का क्षरण होता है : ताजा नतीजों ने साबित कर दिया है सरकारी स्‍कूलों की श्रेष्‍ठता : निजी स्‍कूल वाले चाहें डफली

बजाएं, लेकिन वे फिसड्डी साबित हुए :

मेरी बिटिया संवाददाता

लखनऊ : एक कड़वे सच को देखने का साहस जुटाइये। दिल कर थाम कर पढिये, और फिर दीदा फाड़ कर समझने की कोशिश कीजिए कि हम हमारे-आपके बच्‍चों की मेधा को निजी स्‍कूलों में तराशने के लिए नहीं भेज रहे हैं। बल्कि सच बात तो यही है कि दुनिया भर के तामा-झामा और हो-हल्‍ला मचाने वाले ऐसे निजी स्‍कूलों में आपके बच्‍चों की मेधा को नहीं सहलाया जा पा रहा है, बल्कि उनमें गधत्‍व का विकास किया जा रहा है।

विभिन्‍न परीक्षाओं के नतीजे बताते हैं कि निजी और पब्लिक स्‍कूलों में आपके बच्‍चों में वह विकास नहीं किया जा पा रहा है, जो दीगर सरकारी क्षेत्र में संचालित किये जा रहे विद्यालयों में हो पा रहा है। सच यही है कि सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों के मुकाबले निजी क्षेत्र के स्‍कूलों का प्रदर्शन बहुत नीचे दर्जे पर महसूस किया गया है। निजी स्‍कूल के परिणाम काफी कम हुए हैं, जबकि सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों के छात्रों की मेधा ने बाजी मार ली है। इन विद्यालयों में केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और अन्‍य सरकारी पाठशालाएं प्रमुख हैं।

कहने की जरूरत नहीं कि इस पूरे प्रकरण ने हमारे देश की शिक्षा-व्‍यवस्‍था और उसकी प्रणाली पर एक गम्‍भीर सवाल उठा दिया है। साफ बात तो यह है कि यह बिकाऊ बिक्री के लिए तैयार माल की तरह हम सब अपने बच्‍चों को पेश कर रहे हैं। और अगर यह कहा जाए कि वाकई हम बुरे दौर में दिख रहे हैं, जहां सरकारी श्रेष्‍ठता के विरूद्ध निजी स्‍कूलों की निकृष्‍टता थोपी जा रही है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

1 / 5

दिल थाम कर सुनो, कि निजी स्‍कूलों के लालची गधों के हवाले हैं तुम्‍हारे बच्‍चे

Written by कुमार सौवीर
Monday, 19 June 2017 22:57

दरअसल इस से जुड़ी एक जानकारी भारत सरकार में सचिव पद पर तैनात अनिल स्‍वरूप ने दी है। लखनऊ में पढ़े-पले अनिल स्‍वरूप यूपी कैडर के आईएएस हैं, और फिलहाल प्रतिनियुक्ति में केंद्र सरकार में हैं। लिंकडेन नामक सोशल साइट पर अनिल स्‍वरूप ने लिखा है कि:- Government schools out do private schools. CBSE results disprove common perception. आपको बता दें कि अनिल स्‍वरूप की इस राय पर कई प्रतिक्रियाएं आयी हैं।

DHARMARAJ T NATHAN : VVery good news. People have wrong notion that private schools are edge over the Government schools. The quality of teaching is same in private as well as Government schools. Well done. Kudos to Teachers and students.

SANDEEP SHARMA : Excellent

Neetu Jaglan : Glad to know. Eye Opener. Congratulations to that Brilliant Staff.

Marut Kumar : sainik school ka pas out percentage kitna hai koi batayega

Sandeep Mukherjee : Navoday and KV schools are elite establishments ....

Vinay Mehra : Well this certainly needs to be applauded and cannot or should not go unseen...i wish and hope quality and trust in government schools return after all so much is spent on education by government and every penny spent here is reaching to the most deserved ones makes me feel happy.

Major Kishan singh Chauhan (retired) : Mr Swarup - a heartening news - as they say - in our ancient scriptures - (in roman -) EK VYAKTI KA EK GRAM KA EK PRADESH KA AUR EK DESHPANDE KA SABSE BADA SHATRU AGYAN (ignorance) HAI - and the day all our government schools impart top end education (which can only happen if we have high class teachers - in short - TOP END RECRUITMENT IN STATE MUST COME TO FIRST EDUCATION SERVICE - then to STATE SERVICE , THEN TO STATE POLICE SERVICE -) the day country can place teacher above all and a most learned and competent given best pay and status - india will be a super power - keep up the good work - regards

2 / 5

Seema Dubey : Awesome!

Anurag Chandrasekhar Saxena : great

Pradeep Kunwar :

rightly said, money can buy you a book but not the education or knowledge, it's our efforts to get so. congrats to efforts of students and teachers of govt schools.

Satnam Singh : I proud to be a navodiyan...Thanks

PRABHAT JHA : Proud to be Navodayan

नवोदय व केंद्रीय विद्यालयों का दूर-दूर तक मुकाबला नहीं, पब्लिक स्कूल फिसड्डी

जवाहर नवोदय विद्यालयों और केंद्रीय विद्यालयों के मुकाबले अन्य स्कूल बहुत पीछे रहे। ओवरऑल परिणाम खराब आने की एक प्रमुख वजह अभिभावकों से मोटी फीस वसूलने वाले पब्लिक स्कूलों का फिसड्डी प्रदर्शन भी रहा। स्कूलों की श्रेणियों के अनुसार परिणाम इस प्रकार रहे -

रैंक	स्कूल श्रेणी	रिजल्ट
1.	जवाहर नवोदय विद्यालय	95.73
2.	केंद्रीय विद्यालय	94.60
3.	सेंट्रल तिब्बतियन स्कूल्स एडमिनिट्रेशन	83.57
4.	सरकारी स्कूल	82.29
5.	सरकारी अनुदान पर चल रहे स्कूल	81.63

6. प्राइवेट स्कूल : 79.27 प्रतिशत

Upendra Singh Rahar : Please appraise and promote Government run schools..also pls limit the privatization of educational system at all level of education either school or higher education system.

This indeed an urgent need of an hour.

दिल थाम कर सुनो, कि निजी स्‍कूलों के लालची गधों के हवाले हैं तुम्‍हारे बच्‍चे

Written by कुमार सौवीर
Monday, 19 June 2017 22:57

varsha chhirolya: glad to know .. nd proud to be navodayan

Amit singh : Proud to be a Jawahar Navodaya vidyalaya Ex student

Krishnamurty Worah: This had always been there in parts of India but only now reported because media is picking up everything on its radar and social media expands. The report on these Linkedin pages of training for teachers failing in well known urban schools is an eye opener - teachers have not responded because they spent time on criticizing the continuous evaluation and other methods and failed to absorb these in their minds. State board schools are far better and eager . No wonder about these results.

Virendra Sahu : Anil Swarup...Thanks for sharing it. May I know its source, I would love to read it in details across region.

Ravi Bhushan Chaudhary : अनिल जी, इस में हम अभिभावक ही मूलतः दोषी हैं । सामान्यतः हम अपने आप को बड़ा दिखाना पसंद करते हैं । अन्यथा जितना समय हम प्राइवेंट स्कुल में दाखिला दिलाने एवं उसके बाद बच्चों पर देते हैं अगर उतना समय सरकारी स्कूल में पढते बच्चों पर दिया जावे तो वो कहाँ से कहाँ पहुँच जाऐ

kunal mahajan : Its known to all that public schools mint money, make wards to take tuitions as their teachers mostly r incapable of teaching : Hemant Bhagoria

Absolutely true and encouraging to Govt schools. The quality of teachers and their experience in KVs and Navodaya Vidyalayas is unmatched. Now a days it is very difficult to get admission into any KV or Navodaya Vidyalaya but very easy to get in any top private school.

Yogesh Kaushik : Though we must applaud govt school staff and adminstration for a commendable feat, yet, it brings a more important dimension to the fore...that, the students, in these resource crunched schools, are more focussed, capable and motivated. They, perhaps can achieve much more, than typical brats, given some additional support and facilities.

4 / 5

Dheeraj Bhatia : Sir - You should refrain from putting these kind of misleading articles as the situation in Govt Schools is really bad. Request you to please get a survey done that how many political leaders and beaurecrats are putting their children in Government Schools. Any town you visit, all the IAS/IPS officers admit their children in leading Private Schools.

The Government Schools have made a mockery of education system in India and it's really commendable that officers of High Integrity like you have put in charge by the MHRD minister who himself is a man of cause.

We are highly optimistic that with you at the helm of affairs, things will drastically improve in Government School where colossal loss of taxpayers money is happening.

Thomas Charles Williams : I agree with Dr Dheeraj : indly do your research.

kumar sauvir : वाकई हम बुरे दौर में दखि रहे हैं, जहां सरकारी श्रेष्ठता के विरुद्ध निजी स्कूलों की निकृष्टता थोपी जा रही है।

(अब www.meribitiya.com की हर खबर को फौरन हासिल कीजिए अपनी फेसबुक पर। मेरी बिटिया डॉट कॉम के फेसबुक पेज पर पधारिये और LIKE पर क्लिक कीजिए)

(अपने आसपास पसरी-पसरती दलाली, अराजकता, लूट, भ्रष्टाचार, टांग-खिंचाई और किसी प्रतिभा की हत्या की साजिशें किसी भी शख्स के हृदय-मन-मस्तिष्क को विचलित कर सकती हैं। समाज में आपके आसपास होने वाली कोई भी सुखद या घटना भी मेरी बिटिया डॉट कॉम की सुर्खिया बन सकती है। चाहे वह स्त्री सशक्तीकरण से जुड़ी हो, या फिर बच्चों अथवा वृद्धों से केंद्रित हो। हर शख्स बोलना चाहता है। लेकिन अधिकांश लोगों को पता तक नहीं होता है कि उसे अपनी प्रतिक्रिया कैसी, कहां और कितनी करनी चाहिए।अब आप निःश्चिंत हो जाइये। अब आपके पास है एक बेफिक्र रास्ता, नाम है प्रमुख न्यूज पोर्टल www.meribitiya.com। आइंदा आप अपनी सारी बातें हम www.meribitiya.com के साथ शेयर कीजिए न। ऐसी कोई घटना, हादसा, साजिश की भनक मिले, तो आप सीधे हमसे सम्पर्क कीजिए। आप नहीं चाहेंगे, तो हम आपकी पहचान छिपा लेंगे, आपका नाम-पता गुप्त रखेंगे। आप अपनी सारी बातें हमारे ईमेल kumarsauvir@gmail.com पर विस्तार से भेज दें। आप चाहें तो हमारे मोबाइल 9415302520 पर भी हमें कभी भी बेहिचक फोन कर सकते हैं।)